Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान सब इंस्पेक्टर

पेपर – 1

सामान्य हिंदी

SIERRA INNOVATIONS

शब्द रचना

1. भाषा 2
2. ध्वनि 4
3. संधि 7
4. समास 13
5. उपसर्ग 17
6. प्रत्यय 21

शब्द प्रकार

7. तत्सम-तद्भव 27
8. विदेशी भाषा के शब्द 29
9. संज्ञा 32
10. सर्वनाम 34
11. विशेषण 36
12. क्रिया 39
13. अव्यय 41

शब्द ज्ञान

14. पर्यायवाची 45
15. विलोम शब्द 56
16. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द 62
17. शब्द युग्म 67
18. वर्तनी शुद्धि 76

व्याकरणिक कोटियाँ

19.लिंग 79

20.वचन 84

21.वाच्य 90

22.कारक 92

23.संज्ञा एंव सर्वनाम पदों की रूप रचना 97

24.विराम चिन्ह व उनके प्रयोग 101

25.काल 104

वाक्य

26.वाक्य रचना 107

27.वाक्य शुद्धि 111

28.शुद्ध वाक्य 114

मुहावरे एंव लोकोक्तियाँ

29.मुहावरे 122

30.लोकोक्ति 133

शब्दावली

31.परिभाषित शब्दावली 147

Toppersnotes
Unleash the topper in you

शब्द रचना

भाषा

"भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य बोलकर, लिखकर या संकेत पर परस्पर अपना विचार सरलता, स्पष्टता, निश्चितता तथा पूर्णता के साथ प्रकट करता है ।

बोली

"बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते है जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है; किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलनेवाले उसे समझ न सकें, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलनेवालों के उच्चारण, रूप-रचना, वाक्य-गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती ।"

भाषा का क्षेत्र व्यापक हुआ करता है । इसे सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, व्यापारिक आदि मान्यताएँ प्राप्त होती हैं; जबकि बोली को मात्र सामाजिक मान्यता ही मिल पाती है । भाषा का अपना गठित व्याकरण हुआ करता है; परन्तु बोली का कोई व्याकरण नहीं होता । हाँ, बोली ही भाषा को नये-नये बिम्ब, प्रतीकात्मक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि समर्पित करती है । जब कोई बोली विकास करते-करते उक्त सभी मान्यताएँ प्राप्त कर लेती है, तब वह वोली न रहकर भाषा का रूप धारण कर लेती है। जैसे-खडी बोली हिन्दी जो पहले (द्विवेदी-युग से पूर्व) मात्र प्रांतीय भाषा या बोली मात्र थी वह आज भाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है ।

एक बोली जब मानक भाषा बनती है और प्रतिनिधि हो जाती है तो आस-पास की बोलियों पर उसका भारी प्रभाव पडता है । आज की खडी बोली ने ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि सभी को प्रभावित किया है । हाँ, यह भी देखा जाता है कि कभी-कभी मानक भाषा कुछ बोलियों को बिल्कुल समाप्त भी कर देती है । एक बात और है, मानक भाषा पर स्थानीय बोलियों का प्रभाव ही देखा जाता है ।

एक उदाहरण द्वारा इसे आसानी से समझा जा सकता है- बिहार राज्य के बेगूसराय खगडिया, समस्तीपुर आदि जिलों में प्रायः ऐसा बोला जाता है-

हम कैह देंगे । हम नै करेंगे आदि ।

भोजपुर क्षेत्र में : हमें लौक रहा है (दिखाई पड रहा है) । हम काम किये (हमने काम किया)

पंजाब प्रान्त का असर : हमने जाना है (हमको जाना है) ।

दिल्ली-आगरा क्षेत्र मे : वह कहवे था/मैं जाऊँ । मेरे को जाना है ।

कानपुर आदि क्षेत्रों में : वह गया हैगा ।

एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ हो सकती हैं, जबकि एक बोली में कई भाषाएँ नहीं होतीं ।

बोली बोलनेवाले भी अपने क्षेत्र के लोगों से तो बोली में बातें करते हैं; किन्तु बाहरी लोगों से भाषा का ही प्रयोग करते हैं ।

ग्रियर्सन के अनुसार भारत में 6 भाषा-परिवार, 179 भाषाएँ और 544 बोलियों हैं-

(क) भारोपीय परिवार : उत्तरी भारत में बोली जानेवाली भाषाएँ ।

(ख) द्रविड परिवार : तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम ।

(ग) आस्ट्रिक परिवार : संताली, मुंडारी, हो, सवेरा, खडिया, कोर्क, भूमिज, गदवा, पलौंक, वा, खासी, मोनख्मे, निकोबारी ।

(घ) तिव्वती चीनी : लुशेइ, मेइथेइ, मारो, मिश्मी, अबोर-मिरी, अक ।

(ङ) अवर्गीकृत : बुरूशास्की, अंडमानी भर

(च) करेन तथा मन : बर्मा की भाषा (जो अब स्वतंत्र है)

हिन्दी भाषा

बहुत सारे विद्वानों का मत है कि हिन्दी भाषा संस्कृत से निष्पन्न है; परन्तु यह बात सत्य नहीं है । हिन्दी की उत्पत्ति प्राकृत से । प्राकृत भाषा अपने पहले की पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है । स्पष्ट है कि हमारे आदिम आर्यो की भाषा पुरानी संस्कृत थी । उनके नमूने ऋग्वेद में दिखते हैं । उसका विकास होते-होते कई प्रकार की प्राकृत भाषाएँ पैदा हुई । हमारी विशुद्ध संस्कृत किसी पुरानी प्राकृत से ही परिमार्जित हुई । प्राकृत भाषाओं के बाद अपभ्रशों का जन्म हुआ और उनसे वर्तमान संस्कृतोत्पन्न भाषाओं की । हमारी वर्तमान हिन्दी, अर्द्धगामी और शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है ।

हिन्दी भाषा और उसका साहित्य किसी एक विभाग और उसके साहित्य के विकसित रूप नहीं हैं; वे अनेक विभाषाओं और उनके साहित्यों की समष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं । एक बहुत बडे क्षेत्र-जिसे चिरकाल से मध्यदेश कहा जाता रहा है-की अनेक बोलियों के ताने-बाने से बुनी यही एक ऐसी आधुनिक भाषा है, जिसने अनजाने और

अनौपचारिक रीति से देश की ऐसी व्यापक भाषा बनने का प्रयास किया था, जैसी संस्कृत रहती चली आई थी; किन्तु जिसे किसी नवीन भाषा के लिए अपना स्थान तो रिक्त करना ही था ।

वर्तमान हिन्दी भाषा का क्षेत्र बडा ही व्यापक हो चला है । इसे निम्नलिखित विभागों में बाँटा गया है-

(क) बिहारी भाषा : बिहारी भाषा बँगला भाषा से अधिक संबंध रखती है । यह पूर्वी उपशाखा के अंतर्गत है और बँगला, उडिया और आसामी की बहन लगती है । इसके अंतर्गत निम्न बोलियाँ हैं- मैथिली, मगही, भोजपुरी, पूर्वी आदि । मैथिली के प्रसिद्ध कवि विद्यापति ठाकुर और भोजपुरी के बहुत बडे प्रचारक भिखारी ठाकुर हुए ।

(ख) पूर्वी हिन्दी : अर्द्धमागधी प्राकृत के अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी निकली है । गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस-जैसे महाकाव्यों की रचना पूर्वी हिन्दी में ही की । दूसरी तीन बोलियाँ हैं- अवधी, बघेली और छत्तीसगढी । मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ इसी भाषा में लिखी हैं ।

(ग) पश्चिमी हिन्दी : पूर्वी हिन्दी तो बाहरी और भीतरी दोनों शाखाओं की भाषाओं के मेल से बनी हैं; परन्तु पश्चिमी हिन्दी का संबंध भीतरी शाखा से है ।

यह राजस्थानी, गुजराती और पंजाबी से संबंध रखती है । इस भाषा के कई भेद हैं--हिन्दुस्तानी, ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू और दक्षिणी ।

गंगा-यमुना के बीच मध्यवर्ती प्रान्त में और उसके दक्षिण दिल्ली से इटावे तक ब्रजभाषा बोली जाती है । गुडगाँव और भरतपुर, करोली और ग्वालियर तक ब्रजभाषी है । इस भाषा के कवियों में सूरदास और बिहारीलाल ज्यादा चर्चित हुए ।

कन्नौजी, ब्रजभाषा से बहुत कुछ मिलती-जुलती है । इटावा से इलाहाबाद तक इसके बोलनेवाले हैं । अवध के हरदोई और उन्नाव में यही भाषा बोली जाती है ।

बुंदेली बुंदेलखंड की बोली है । झाँसी, जालौन, हमीरपुर और ग्वालियर के पूर्वी प्रान्त, मध्यप्रदेश के दमोह छत्तीसगढ के रायपुर, सिउनी, नरसिंहपुर आदि स्थानों की बोली बुंदेली है । छिंदवाडा और हुशंगाबाद के कुछ हिस्सों में भी इसका प्रचार है ।

हिसार, झींद, रोहतक, करनाल आदि जिलों में बाँगरू भाषा बोली जाती है। दिल्ली के आसपास की भी यही भाषा है ।

दक्षिणी हिन्दी बोलनेवाले मुंबई, बरोदा,बरार, मध्य प्रदेश, कोचीन, कुग, हैदराबाद, चेन्नई, माइसोर और ट्रावनकोर तक फैले हैं । इन क्षेत्रों के लोग मुझे या मुझको की जगह 'मेरे को' बोलते हैं ।

भारत की भाषाओं की सूची		
क्र. सं.	भाषाएँ	बोलनेवालों का अनुपात % में
1	संस्कृत	0.01
2	मैथिली	0.9
3	मराठी	7.5
4	नेपाली	0.3
5	पंजाबी	2.8
6	संथाली	0.6
7	मलयालम	3.6
8	मणिपुरी	0.2
9	असमिया	1.6
10	ओडिया	3.4
11	गुजराती	4.9
12	कश्मीरी	0.5
13	कन्नड	3.9
14	डोगरी	0.2
15	कोंकणी	0.2
16	बांग्ला	8.3
17	तमिल	6.3
18	सिंधी	0.3
19	उर्दू	5.2
20	बोडो	0.1
21	तेलुगू	7.9
22	हिन्दी	40.2

देवनागरी लिपि

'हिन्दी' और 'संस्कृत' देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। 'देवनागरी लिपी का विकास 'ब्राह्मी लिपी' से हुआ, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात नरेश जयभट्ट के एक शिलालेख में मिलता है । 8वीं एवं 9वीं सदी में क्रमशः राष्ट्रकूट नरेशों बडौदा के ध्रुवराज ने अपने देशों में इसका प्रयोग किया था । महाराष्ट्र में इसे 'बालबोध' के नाम से संबोधित किया गया ।

देवनागरी लिपि पर तीन भाषाओं का बडा महत्त्वपूर्ण प्रभाव पडा ।

(i) फारसी प्रभाव : पहले देवनागरी लिपि में जिह्वामूलीय ध्वनियों को अंकित करने के चिह्न नहीं थे, जो बाद में फारसी से प्रभावित होकर विकसित हुए- क, ख, ग, ज, फ ।

(ii) बांग्ला-प्रभाव : गोल-गोल लिखने की परम्परा बांग्ला लिपि के प्रभाव के कारण शुरू हुई ।

(iii) रोमन-प्रभाव : इससे प्रभावित हो विभिन्न विराम-चिह्नों, जैसे--अल्प विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नसूचक चिह्न, विस्मयसूचक चिह्न, उद्धरण चिह्न एवं पूर्ण विराम में 'खडी पाई' की जगह 'बिन्दु' (च्वपदज) का प्रयोग होने लगा ।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :

- इसके ध्वनिक्रम पूर्णतया वैज्ञानिक हैं ।
- प्रत्येक वर्ग में अघोष फिर सघोष वर्ण हैं।
- वर्गों की अंतिम ध्वनियाँ नासिक्य हैं ।
- छपाई एवं लिखाई दोनों समान हैं ।
- ह्रस्व एवं दीर्घ में स्वर बँटे हैं ।
- निश्चित मात्राएँ हैं ।
- उच्चारण एवं प्रयोग में समानता है ।
- प्रत्येक के ढिए अलग लिपि चिह्न हैं ।

ध्वनि

'ध्वनि' का अर्थ है-वर्ण या भाषा की लघुतम इकाई । इसका खंड या टुकडा नहीं हो सकता ।
अर्थात 'वर्ण वह मूल ध्वनि है, जिसका खंड नहीं होता ।''
वर्णों या ध्वनियों के क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं । हिन्दी वर्णमाला में कुल 46 वर्ण हैं-

1. स्वर वर्ण (11)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ और औ ।
स्वर वर्णों का उच्चरण बिना रुके लगातार होता है । ऊपर के किसी वर्ण का उच्चारण लगातार किया जा सकता है सिर्फ 'ऋ' वर्ण को छोडकर; क्योंकि ऋ का लगातार उच्चारण करने पर 'इ' स्वर आ जाता है ।
उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर स्वर वर्णों को दो भागों में बाँटा गया है-

(a) मूल या ह्रस्व स्वर- अ, इ, उ और ऋ
(b) दीर्घ स्वर-आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, और औ
ए : अ/आ + इ/ई (गुण होने के कारण)
ओ : अ/आ + उ/ऊ (गुण होने के कारण)
ऐ : अ/आ + ए (वृद्धि होने के कारण)
औ : अ/आ + ओ (वृद्धि होने के कारण)

जाति के अनुसार स्वर वर्णों को दो भागों में रखा गया है-

(a) सजातीय/सवर्ण स्वर : इसमें सिर्फ मात्रा का अंतर होता है । ये ह्रस्व और दीर्घ के जोडेवाले होते हैं । जैसे-
अ-आ इ-ई उ-ऊ

(b) विजातीय/असवर्ण स्वर : ये दो भिन्न उच्चारण स्थानवाले होते हैं । जैसे-
अ-इ उ-ओ आदि ।

स्वरों के प्रतिनिधि रूप, जिनसे व्यंजन वर्णों का उच्चारण हो पाता है 'मात्रा' कहते हैं ।

2. व्यंजन वर्ण (33)

व्यंजन वर्णों का उच्चारण रुक-रूक कर होता है । ये वर्ण आधी मात्रावाले होते हैं, इसलिए बिना स्वर के इनका उच्चारण असंभव है ।
व्यंजन वर्णो को तीन भागों में बाँटा गया है-

(क) स्पर्श व्यंजन : ये वर्ण विभिन्न वागिन्द्रियों (कंठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ आदि) से स्पर्श क कारण उच्चरित होते हैं । इसके अंतर्गत निम्नलिखित वर्ण आते हैं-

कवर्ग : क् ख् ग् घ् ङ्

चवर्ग : च् छ् ज् झ् ञ
टवर्ग : ट् ठ् ड् ढ् ण् (ड़, ढ़)
तवर्ग : त् थ् द् ध् न्
पवर्ग : प् फ् ब् भ् म्

(ख) अन्तःस्थ व्यंजन : ये वर्ण स्पर्श एवं ऊष्म के बीच आते हैं। इसके अंतर्गत य्, र्, ल् और व्- ये चार ध्वनियाँ आती हैं।

(ग) ऊष्म व्यंजन : ये ऐसे वर्ण हैं, जिनके उच्चारण में विशेष घर्षण के कारण मुख से गर्म हवा निकलती है। इसके अंतर्गत श्, ष्, स् और ह् आते हैं।

(iii) अयोगवाह वर्ण : 'अनुस्वार' और 'विसर्ग' अयोगवाह वर्ण हैं। ये स्वर एवं व्यंजन दोनों द्वारा ढोए जाते हैं। जैसे-

अं-अः (स्वर द्वारा) कं-कः (व्यंजन द्वारा)

उच्चारण में वायु-प्रक्षेप की दृष्टि से या काकल के आधार पर वर्णों के दो प्रकार हैं-

(क) अल्पप्राण : ऐसे वर्ण, जिनके उच्चारण में वायु की सामान्य मात्रा रहती है और हकार-जैसी ध्वनि बहुत ही कम होती है। इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्ण, वर्गों के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण, अनुस्वार और अन्तःस्थ व्यंजन आते हैं। इसकी कुल संख्या 11 + 15 + 1 + 4 =31 है।

(ख) महाप्राण : महाप्राण ध्वनियों के उच्चारण में वायु की पर्याप्त मात्रा होती है, जिसके कारण हकार-जैसी ध्वनि स्पष्ट दिखती है। इसके अंतर्गत सभी वर्गों के द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन, विसर्ग और ऊष्म व्यंजन आते हैं। इसकी कुल संख्या 10 + 1 + 4 = 15 है।

स्वर-तंत्री के आधार पर वर्णों को दो अन्य भागों में भी बाँटा गया है।

(क) घोष या सघोष वर्ण : घोष ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियाँ आपस में मिल जाती हैं और वायु धक्का देते बाहर निकलती है। फलतः झंकृति पैदा होती है। इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण, अन्तःस्थ और ह आते हैं।

(ख) अघोष वर्णों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियाँ परस्पर नहीं मिलती। फलतः वायु, आसानी से निकल जाती है। इस वर्ग में वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण और तीनों स (श, ष, स) आते है।

आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर स्वरों को चार और व्यजनों को आठ वर्गों में रखा गया है-

	प्रकार	वर्ण
स्वर	संवृत स्वर	इ, ई, उ और ऊ
	अर्द्धसंवृत स्वर	ए, ऐ, ओ और औ
	अर्द्धविवृत स्वर	अ
	विवृतस्वर	आ

	प्रकार	वर्ण
व्यंजन	स्पर्श व्यंजन	क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प. फ, ब, भ
	स्पर्श संघर्षी व्यंजन	न, छ, ज और झ
	संघर्षी व्यंजन	म, श, ह, ख, ग, ज, फ और व
	अनुनासिक	छ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार
	पार्श्विक	ल
	लुंठित/प्रकंपी	र
	उत्क्षिप्त	ड़, ढ़
	अर्द्ध स्वर	य और व

उच्चारण-स्थान की दृष्टि से वर्णों को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है-

प्रकार	वर्ण
1. कंठ्य वर्ण	अ, आ, कवर्ग, विसर्ग और ह
2. तालव्य वर्ण	इ, ई, चवर्ग, य और श
3, मूर्द्धन्य वर्ण	ऋ, टवर्ग, र और ष
4. दंत्य वर्ण	तवर्ग और स
5. वर्त्स्य वर्ण	ल
6. ओष्ठ्य वर्ण	उ, ऊ और पवर्ग
7. कष्ठ-तालव्य वर्ण	ए और ऐ
8. कण्ठोष्ठ्य वर्ण	ओ और औ
9. दन्तोष्ठ्य वर्ण	व
10 नासिक्य वर्ण	पंचमाक्षर और अनुस्वार
11. अलिजिह्व वर्ण	क, ख, ग, ज और फ

उच्चारण करने की स्थिति में एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि क्रमशः आती रहती है और ध्वनियों के मध्य आवश्कतानुसार अल्पकालिक विराम की अवस्था आती है। इसी को 'संगम' कहा जाता है। इस एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि पर जाने के दो तरीके होते हैं-

(क) कभी वक्ता सीधे पहली से दूसरी ध्यनि पर चला जाता है। जैसे -

तुम् (तुम्हारा के उच्चारण में)

(ख) कभी वक्ता थोडा ज्यादा समय लता है । जैसे-

तुम हारे (तुम्हारे के उच्चारण में)

संगम के लिए किसी विराम चिन्ह की आवश्यकता नहीं पडती है । इसके प्रयोग से शब्दों या वाक्यों के अर्थो में भिन्नता आ सकती है । जैसे-

नफीस - सुन्दर (एक साथ उच्चारित होने पर)

न फीस-निःशुल्क (अलग-अलग उच्चारित होने पर)

सोना- स्वर्ण सो ना- मत सो

वाक्यों में प्रयोग देखें-

वह बैलगाडी खींचता है । (कोई व्यक्ति)

वह बैल गाडी खींचता है । (बैल के बारे में)

उच्चारण के समय जब स्वरों पर अधिक बल पडता है तब उसे बलाघात या स्वराघात कहा जाता है ।

यह तीन तरह का होता है-

1. वर्ण-बलाघात : इससे अर्थ में अन्तर आ जाता है। जैसे-पिट-पीट, लुट-लूट

इन उदाहरणों में स्पष्ट देखा जा रहा है कि 'पि' और 'लु' पर बलाघात के कारण अर्थों अंतर आ गया है ।

2. शब्द-बलाघात : इससे वाक्यों के अर्थों में स्पष्टता आती है ।

3. वाक्य-बलाघातः इसमें वाक्य के भिन्न-भिन्न पदों पर बलाघात के कारण भावों में अंतर देखा जाता है ।

ध्वनियों की उस छोटी से छोटी इकाई को 'अक्षर' कह जाता है, जिनका उच्चारण एक झटके में होता है । जैसे-

आ- एक ध्वनिवाला अक्षर

खा- दो ध्वनियों वाला अक्षर

बैठ- तीन ध्वनियों वाला अक्षर

अक्षर दो प्रकार के होते हैं-

1. बद्धाक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि हलंतयुक्त हो । जैसे- श्रीमान्, जगत्, परिषद् आदि ।

2. मुक्ताक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि स्वर हो । जैसे- खा, ला, पी, जा, जगत आदि ।

जब कोई व्यंजन वर्ण स्वयं से ही संयोग करें, तो वह 'युग्मक ध्वनि' और जब किसी अन्य व्यंजन वर्ण से संयोग करे तो वह 'वयंजन गुच्छ कहलाता है ।

शॉर्ट ट्रिक

वर्णों के उच्चारण स्थान के लिए इसे याद कर लें

'अकह विसर्ग' कण्ठराम । 'इचयश' भी हैं तालु राम ॥

'ऋटष' से जानो मूर्द्धा जी । 'लृतस' पुकारो दन्त जी ॥

'उप' आते हैं ओष्ठ में । केवल 'व' दन्तोष्ठ में ॥

'ए-ऐ' कहे कण्ठ-तालु । 'ओ-औ' कहे कण्ठोष्ठ में ॥

नासिका से पंचमाक्षर । जिह्वा रखो प्रकोष्ठ में ॥

संधि

- संधि का शाब्दिक अर्थ – मेल/जोडना
- संधि का संधि विच्छेद – सम + धि
- संधि शब्द का विलोम – विग्रह/विच्छेद
  जैसे :- जगत् + ईश – जगदीश

- संधि – दो या दो से अधिक वर्णों के मेल होने से वर्णो में विकार उत्पन्न होता है और नये सार्थक शब्द की रचना हो जाती है उन्हें संधि कहते है।

- संधि सदैव समान अर्थ में होती है। विरोधी अर्थो में संधि नहीं होती

- विश्व + अनाथ – विश्वनाथ – विश्व नाथ
  विश्व + अमित्र – विश्वामित्र – विश्व मित्र
  दीन+अनाथ – दीनानाथ – दीन नाथ
  षट् + अंग – षडग
- संधि में सदैव वर्णो में विकार परिवर्तन उत्पन्न होना चाहिए तो संधि होती है। यदि वर्णो में विकार उत्पन्न नहीं होता है तो संधि नहीं होकर वह संयोग कहलाता है।

- अन् + उचित / अनुचित
  संयोग – निर् + अर्थक / निरर्थक
  सम् + उचित / समुचित

संधि के भेद

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

- स्वर संधि :- यदि स्वर के बाद स्वर आता है तो स्वर में विकार उत्पन्न हो जाता है उसे स्वर संधि कहते है।
  स्वर संधि के पाँच भेद :-

1. दीर्घ स्वर संधि :- (आ, ई, ऊ)

नियम

1. यदि अ/आ के बाद सवर्ण अ या आ आता है तो दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'आ ' हो जाता है।

2. इ या ई के बाद सवर्ण इ या ई आता है दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश ई हो जाता है।

- नियम 3 – यदि उ या ऊ के बाद सवर्ण उ या ऊ आता है तो दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश ऊ हो जाता है
- उदाहरण – अ /आ या आ /अ

दाव + अग्नि = दावाग्नि जगंल की आग
राम + अयन = रामायण
पंच + आयत = पंचायत
मुक्ता + अवली = मुक्तावली
दीप + अवली = दीपावली

वडवा + वडव अग्नि – वडवाग्नि समुद्र की आग
काम + अग्नि – कामाग्नि
जठर + अग्नि – जठराग्नि पेट की आग
रवि + इन्द्र – रवीन्द्र
कवि + ईश – कवीश
नदी + ईश – नदीश
मही + इन्द्र – महीन्द्र
वधु + उल्लास – वधूल्लास
चमू + उल्लास – चमूल्लास
भानु + उदय – भानूदय
धेनू + उत्सव – धेनूत्सव

2. गुण सन्धि –
नियम 1 –यदि अ आ के बाद इ या ई आये तो ए हो जाता है ।
नियम 2 – अ आ के बाद उ ऊ आता है तो दोनो के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।
नियम 3 – अ आ के बाद ऋ आता है तो दोनो के स्थान पर 'अर' हो जाता है।

उदाहरण – महा + ईश – महेश
महा + इन्द्र – महेन्द्र
रमा + ईश – रमेश
गण + ईश – गणेश
चाँदनी राका + ईश – राकेश
हर्षीक + ईश – हर्षीकेश
वसंत + उत्सव – वसंतोत्सव
गंगा + उत्सव – गंगोत्सव
गंगा + ऊर्मि – गंगोर्मि
समुद्र + ऊर्मि – समुद्रोर्मि
शीत + उत्सव – शीतोत्सव
महा + ऋषि – महार्षि

- सन्धि –
नियम 1 – अ आ के बाद ए या ऐ आता है तो दोनो के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है।
नियम 2 – यदि अ आ के बाद ओ या औ आता है तो दोनो के स्थान पर 'औ' हो जाता है।
उदाहरण – सदा + एव – सदैव

महा + ऐश्वर्य - मार्हेश्वय
महा + ओज - महौज
महा + ओध - महौध
जल + ओध - जलौध
महा + औषधि - महौषधि
महा + औषधालय - महौषधालय
गंगा + ओध - गंगौध
जल + ओध - जलौध
एक + एक - एकैक
तथा + एव - तथैव

अपवाद :-

प्र + ऊढ - प्रौढ
अक्ष + ऊहिनी - अक्षौहिनी
स्व + ईरिणी - स्वैरिणी नदी को कहते है
शुद्ध + ओदन चावल - शुद्धोदन

4. यण् सन्धि

नियम 1 - इ ई के बाद असमान स्वर आता है तो इ ई के स्थान पर 'य्' हो जाता है।

नियम 2 - उ ऊ के बाद असमान स्वर आता है तो उ ऊ के स्थान पर 'व्' हो जाता है।

नियम 3 - ऋ के बाद असमान स्वर आता है तो ऋ के स्थान पर 'र्' हो जाता है।

अक्षर से पहले आधा अक्षर आता है तो 99% यण सन्धि होगी ।

उदाहरण -

अधि + अयन - अध्ययन
अधि + आय - अध्याय
अनु + अय - अन्वय
गुरू + आदेश - गुर्वादेश
भानु + आगम - भान्वागम
सु + आगत - स्वागत
सु + आर्थ - स्वार्थ
सु + अच्छ - स्वच्छ
सु + अल्प - स्वल्प
मातृ + आज्ञा - मात्राज्ञा
पितृ + आज्ञा - पित्राज्ञा
मातृ + आदेश - मात्रादेश
भ्रातृ + ऐश्वय - भ्रात्रैश्वर्य
धातृ + अंश - धात्रैश

5. अयादि सन्धि

नियम 1 - ए के बाद कोई भी स्वर आये आता है तो ए के स्थान पर अय् हो जाता है।

नियम 2 - ऐ के बाद काई भी स्वर आता है तो ऐ के स्थान पर आय् हो जाता है

नियम 3 - ओ के बाद कोई स्वर आता है तो ओ के स्थान अव् हो जाता है।

नियम 4 - औ के बाद कोई स्वर आता है तो औ के स्थान पर आव् हो जाता है।

उदाहरण -

ने + अन - नयन
गै + अन - गायन
पो + इत्र - पवित्र
श्रो + अन - श्रवण

रौ + अन - रावण
विधै + अक - विधायक
चे + अन - चयन

पो + अन - पवन
हरे + ए - हरये
धौ + अक - धावक

व्यंजन सन्धि

व्यंजन सन्धि - व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आता है तो व्यंजन मे विकार उत्पन्न हो जाता है उसे व्यंजन सन्धि कहते है।

नियम 1 -किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि काई स्वर आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण -

जगत् + ईश -जगदीश
वाक् + ईश्वर - वागीश्वर
वाक् + ईश्वरी - वागीश्वरी
उत् + आहरण - उदाहरण

नियम 2 -किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि किसी वर्ग का तीसरा , चौथा या य,व ,र वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण -

सत् + धर्म - सद्धर्म
षट् + रस - षड्रस

षट् + रिपु – षड्रिपु
अब + ज – अब्ज कमल
अब + द – अब्द बादल

नियम 3 – यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद 'ह' आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है और ह के स्थान पर भी उसी वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

उत् + हार – उद्धार
तत् + हित – तध्दित
रत्नमुट् + हिसां – रत्नमुंडिसा
वाक् + हरि – वागधरि

नियम 4 – यदि किसी 'वर्ग के चतुर्थ वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का चतुर्थ वर्ण आता तो प्रथम चतुर्थ के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

वुध् + अध – बुद्धि
सिध् + ध – सिद्ध
लभ् + धि – लब्धि
युध् + ध – युद्ध

नियम 5 –यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद किसी वर्ग का पंचम वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर भी उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है

उदाहरण –

जगत् + नाथ – जगन्नाथ
सत् + मति – सन्मति
मृत + मय – मृन्मय
मृत् + मूर्ति – मृन्मूर्ति
वाक् + मय – वाड्मय
मृण्मय, मृण्मूर्ति

नियम 6 – यदि म के बाद क से लेकर म तक कोई वर्ण आता है तो म को अनुस्वार हो जाता है या फिर अगले वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है

उदाहरण –

सम + धि – संधि/ सन्धि
सम् + गठन – संगठन
सम् + जय – संजय
अलम् + कार – अलंकार
शम् + कर – शंकर
सम् + कर – संकर

संगठन – सड्गठन – सडठन
अलंकार – अलड्कार – अलडकार
शंकर – शडकर

नियम 7 – यदि म के बाद य र ल व ष श स ह आता है ता म के स्थान पर केवल अनुस्वार हो जाता है।

उदाहरण –

सम् + यम – संयम
सम् + शेधन – संशोधन
सम् + सार – संसार
सम् + विधान – संविधान
सम् + हार – संहार

नियम – सम् उपसर्ग के बाद क धातु से बने हुए शब्द (कार , करण , कर्ता , कर) आदि आता है तो म का अनुस्वार हो जाता है और बीच मे स् का आधम हो जाता है

उदाहरण –

सम् + कार – संस्कार
सम् + कृत – संस्कृत
सम् + करण – संस्करण
सम् + कृति – संस्कृति

नियम – यदि परि उपसर्ग के बाद कृ धातु से बने हुए शब्द (कार, कर्ण, कर्ता , कर , कृति) आते है तो बीच मे मुर्धा ष् का आगम हो जाता है।

कर्तण्य – सही कर्तव्य , कर्त्ता – सही कर्ता

उदाहरण –

परि + करण – परिष्करण
परि + कार – परिष्कार
परि + कर्ता – परिष्कर्ता

नियम 10 – यदि त द् के बाद स्थ आता है तो स्थ के स् लोप हो जाता है

उदाहरण –

उत् + स्थान = उत्थान
उत् + स्थित = उत्थित जागना
उत् + स्थानम् = उत्थानम्

नियम 11 –यदि त द् के बाद क ख प फ त स आता है तो त् ,द् के स्थान पर त् हो जाता है।

उदाहरण –

उद् + कर्ष – उत्कर्ष
उद् + + तम – उत्तम
तद् + पुरूष – तत्पुरूष

ससद् + सम – संसत्सत्र
उद् + खनन – उत्खनन

नियम 12 –यदि निस् दुस् उपसर्ग के बाद क, ट ,प, फ आता है तो निस् दुस् के स् के स्थान पर मुर्धा ष् हो जाता है।

उदाहरण –
निस् + कृर्ष – निष्कर्ष
निस् + टंकार – निष्टंकार
दुस् + कम – दुष्कर्म
दूस् + पाप – दुष्पाप
दुस् + फल – दुष्फल
निष्टंकार – आवाज न करना ।

नियम 13 – ष के बाद त थ आता है तो त के स्थान पर ट थ के स्थान पर ठ हो जाता है।

उदाहरण – सृप् + ति – सृष्टि
दृष् + ति – दृष्टि
हष् + त – हष्ट
पुष् + त –पुष्ट
षष् + थ – षष्ठ

नियम 14 – यदि इ/3 के बाद स आता है तो स के स्थान पर ष हो जाता है

उदाहरण – अभि +सेक – अभिषेक
नि + संग – निषंग
नि + सेध –निषेध
वि + सम – विषम
सु + समा – सुषमा

निशंग – तरकस – राष् + त्र – राष् + ट्र
राष्ट्र + संन्धि – राष् + त्र = राष्ट्र

नियम 15 - यदि इ/3 के बाद स्थ आता है तो स्थ के स्थान पर ष्ठ हो जाता है।

उदाहरण – नि + स्था – निष्ठा
प्रति + स्था – प्रतिष्ठा
प्रति + स्थित –प्रतिष्ठित
युधि + स्थिर – युधिष्ठिर

नियम – 16 यदि किसी स्वर के बाद अगर छ आता है तो बीच में च् का आगम हो जाता है।

उदाहरण – अनु + छेद – अनुच्छेद
वि + छेद – विच्छेद
(चारों तरफ का) परि + छेद– परिच्छेद
मातृ + छाया – मातृच्छाया
लक्ष्मी + छाया – लक्ष्मीच्छाया

नियम – 17 यदि त्/द के बाद अगर च, छ आता है तो त् द् के स्थान पर भी च् हो जाता है।

उदाहरण – सत् + चित = सच्चित
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
उत् + छेद = उच्छेद
उत् + चारण = उच्चारण

उत् + छिन्न = उच्छिन्न
शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

नियम 18 – यदि त् द् के बाद ज या झ आता है तो त् द् के स्थान पर भी ज् हो जाता है।

उदाहरण –
विद्युत् + ज्योति = विद्युज्ज्योति
जगत् + ज्वल = जगज्जवाला
उत् + ज्वल = उज्जवल
वहत् + झंकार = व्हज्झंकार
महत् + झंकार = महज्झंकार
जगज्जवाला = जगत की ज्वाला

नियम 19 –यदि क त् द् के बाद ट, ठ, हो तो त् द् के स्थान पर भी ट् हो जाता है।

उदाहरण –
तत् + टीका = तट्टीका
वृहत् + टीका = वृहट्टीका

2. त् द् के बाद ड, ढ होतो ड् हो जाता है।

उदाहरण –
उत् + डयन = उड्डयन
उत् + डीन = उड्डीन

नियम 20 – त् द् के बाद ल हो तो त् द् के स्थान पर भी ल् हो जाता है।

उदाहरण –
तत् + लीन = तल्लीन्
तत् + लय = उल्लय
उत् + लेख = उल्लेख
उत् + लिखित = उल्लिखित

नियम 20 –यदि के बाद ल आता है तो के स्थान पर म् को अनुनासिक हो जाता है । और बीच मे ल् का आगम हो जाता है।

उदाहरण –
विद्वान् + लिखति – विद्वानल्लिखित
महान् + लिखति – महाँल्लिखति
महान् + लेख – महाँल्लेख
विद्वान् + लेख – विद्वांल्लेख

नियम 21 –यदि त् द् के बाद ष आता है तो त् द् के स्थान च् हो जाता है और ष के स्थान पर छ हो जाता है।

उदाहरण –

तत् + शिव – तच्छिव
उत् + श्वास – उच्छ्वास
उत् + श्वास – उच्छ्वास लम्बश्विस
श्रीमत् + शरत् + चन्द्र – श्रीमच्छरचन्द्र

नियम 22 –यदि अहन् के बाद र से भिन्न वर्ण आता है तो न् के स्थान पर र् हो जाता है

उदाहरण –

अहन् + पति – अहपति   दिन का स्वामी
अहन् + ऐश्वर्य – अहरैश्वर्य
अहन + गण – अहगण
अहन् + अहन् – अहरह

अहन् के बाद अहन आता है तो अन्तिम न् का लोप हो जाता है।

नियम 23 –यदि अहन् के बाद र वर्ण आता है तो अहन् के स्थान पर अहो हो जाता है।

उदाहरण–

अहन् + रथ – अहोरथ
अहन् + रूप – अहोरूप
अहन् + रात्रि – अहारात्रि – अहोरात्र
अहोरात्र द्वन्द्व समास

नियम 24 – ऋ र ष के बाद न का ण हो जाता है

उदाहरण –

प्र + नाम – प्रणाम
परि + नाम – परिणाम
परि + नय – परिणय
ऋ + न – ऋण
राम + अयन – रामायण   दीर्घ
मीरा + अयन – मीरायण   दीर्घ
रस + अयन – रसायण

नियम 26 – यदि म से पहले च वर्ग ट वर्ग त वर्ग या श स , ह ,ल आता है तो न का ण नही होता है ।

उदाहरण –

रस + अयन – रसायन
दक्षिण + अयन – दक्षिणायन
राजा + अयन – राजायन

वर्णलोप –

पक्षिन + राज – पक्षिराज
प्राणिन + नाथ – प्राणिनाथ
युवन + राज – युवराज
प्रणिन् + शास्त्र – प्राणिशास्त्र

विसर्ग सन्धि (:)

विसर्ग सन्धि – यदि विसर्ग के बाद स्वर या व्यजन आता है तो विसर्ग स्थान पर विकार उत्पनन हो जाता है उसे विसर्ग सन्धि कहते है।

नियम 1 – यदि विसर्ग के बाद त थ आता है तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है।

उदाहरण –

नमः + ते – नमस्ते
मनः + ताप – मनस्ताप
शिरः + त्राण – शिरस्त्राण
बहिः + थल – बहिस्थल
मनः + त्याग – मनस्थल
निः + तेज – निस्तेज
शिरस्त्राण – सिर की रक्षा करना

नियम 2 – यदि विसर्ग के बाद च छ आता है तो विसर्ग के स्थान पर श् हो जाता है

उदाहरण –

निः + चय – निश्चय
निः + छल – निश्छल
मनश्चिकित्सक मनः + चिकित्सक – मनश्चिकित्सक
दुः + छल – दुश्छल
आः + चय – आश्चर्य
मनः + चिकित्सा –मनश्चिकित्सा

नियम 3 – यदि विसर्ग से पहले इ या उ और विसर्ग के बाद क ह ट प फ म तो विसर्ग के बाद क ह ठ प जाता है।

उदाहरण –

धनुः + टंकार – धनुष्टंकार
आविः + कार – आविष्कार
आयुः + मति – आयुष्मति
आयु + मान – आयुष्मान
चतुः + कोण – चतुश्पाद
चतुः + कोण – चतुष्कोण
परिः + कार – परिष्कार

नियम 4 – यदि विसर्ग के बाद (ष , श , स) आता है तो विसर्ग को लोप नही होता है या फिर बाद वाला वर्ण हो जाता है।

उदाहरण -

नमः + शिवाय - नमः शिवाय
नि : + शुल्क - निः शुल्क
दुः + स्वप्न - दुः स्वप्न
दुः + शासन - दुः शासन
प्रातः + स्मरण - प्रातः स्मरण

नमश्शिवाय , निश्शुल्क , दुस्स्वप्न, दुश्शासन , प्रातस्स्मरण

नियम 5 - यदि विसर्ग से पहले अ, आ हो और विसर्ग के बाद कृ धातु (कार , कृत, कृति ,करण कर्ता) से बने शब्द आते है तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है।

उदाहरण -

पुरः + कार - पुरस्कार
तिरः + कार - तिरस्कार
भाः + कार - भास्कर
नमः + कार -नमस्कार
वाचः + पति - वाचस्पति
गृहः + पति - गृहस्पति
बृहः + पति - बृहस्पति

नियम 6 - यदि विसर्ग के पहले अ इ उ हो और विसर्ग के बाद घोष वर्ण हो (3 4 5 य र व ल ह) स्वर आता है तो विसर्ग के स्थान पर र हा जाता है।

उदाहरण -

दुः + गम - दुर्गम
निः + धन - निर्धन
पुनः + विवाह - पुनर्विवाह
आशीः + वाद - आशीर्वाद
निः + अन्तर - निरन्तर

पुनः + वास - पुनर्वास
निः + बल - निर्बल
निः + अभ्र - निरभ्र
निरन्तर , दुरात्मा , निरजंन, निरभ्र - बिना बादल

नियम 7 - यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो और विसर्ग के बाद र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उससे पहले इ उ का दीर्घ हो जाता है ।

उदाहरण -

निः + रस - नीरस
निः + रोग - नीरोग
दुः + राज - दूराज
निः + रज - नीरज
नीर +ज - जल मे जन्म लेने वाला

नियम 8 - यदि विसर्ग से पहले से अ हो और विसर्ग के बाद भी अ हो तो पहले वाला अ और विसर्ग मिलकर ओ हो जाता है और बाद वाले मिलकर ओ हो जाता है और बाद वाले अ अवग्रह चिन्ह हो जाता है।

उदाहरण-

कः + अपि - कोऽपि
मनः - अनुकूल - मनोऽनुकूल
मनः + अभिलाषा - मनोऽभिलाषा
शिवः + अर्च्य - शिवोऽर्च्य
पूज्य

नियम 9 -

यदि विसर्ग से पहले अ हो और विसर्ग के बाद घोष वर्ण (3 4 5 स्वर को यरलव ह) आता है तो विसर्ग और पहले छोडकर वाला अ मिलकर ओ हो जाता है।

उदाहरण -

मनः + ज - मनोज
मनः + हर - मनोहर
अधः + गति - अधोगति
मनः + विज्ञान - मनोविज्ञान
सरः + ज - सरोज
यशः + दा - यशोदा

नियम 10 - यदि विसर्ग के बाद क ख प फ आता है तो विसर्ग का लोप नही होता है

उदाहरण -

प्रातः + काल - प्रातः काल
नभः + कतन - नाभः केतन
अन्तः + पुर - अन्तः पुर
मनः + पूत - मनः पूत

समास

समास का अर्थ - संक्षिप्तीकरण
समास का शाब्दिक अर्थ - संक्षिप्तीकरण

समास का विग्रह - सम् + आस त्र समास
इसमे काई सन्धि नही है संयोग है

समास शब्द का विलोम - व्यास
वि + आस - व्यास यण संधि

- दो या दो से अधिक पदो का मेल होता है और बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है उसे समास कहते है।
- मिले हुए पदो को सामासिक पद कहते है। रसोइघर समास का विग्रह रसोई के लिए घर ।
- रसोईघर - रसोई के लिए घर
- समास सदैव विग्रह पर निर्भर करता है पद के विग्रह के आधार पर ही समास का नाम करण होता है।
- समास मे कम से कम दो पद होते है प्रथम पद को पूर्व पद कहते है द्वितीय पद को उत्तर पद कहते है।

विग्रह के आधर पर समास के भेद -

1. नित्य जाति
2. अनित्य जाति

1. नित्य जाति - जिस समास का सामान्य रूप मे विग्रह नही होता है वह नित्य जाति का समास कहलाता है। - अव्ययीभाव

2. अनित्य जाति -जिस समास का सामान्य रूप मे विग्रह हो जाता है उन्हे अनित्य जाति का समास कहते है।

- समास के 6 भेद होते है -

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरूष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुब्रीहि समास

- <u>अव्ययीभाव समास</u> - जिस समास मे प्रथम पद अव्यय होता है और वही प्रधान होता है तथा दूसरा पद संज्ञा होता है। उसे अव्ययीभाव समास कहते है

अव्ययीभाव समास के दो भेद माने जाते है

1. पूर्व अव्ययपद
2. पूर्व नाम पद

1. <u>पूर्व अव्ययपद</u> - इसमे पहला पद अव्यय होता है और दूसरा पद संज्ञा होता है ।

उदाहरण -

आमरण - मरण पर्यन्त / मरण तक
आजन्म - जन्म पर्यन्त
यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार
यथा क्रम - क्रम के अनुसार / जैसा क्रम
यथा संभव - जैसा संभव हो।
यथागति - गति के अनुसार / जैसी गति
प्रतिदिन - दिन - दिन / हर दिन
प्रतिवर्ष - हर वर्ष / वर्ष -वर्ष
प्रत्येक - हर एक या एक - एक
जीवनभर - पूरा जीवन
भरपेट - भेट भरकर

2. <u>पूर्वनाम पद अव्ययीभाव समास</u> -

इसमे पहला पद आता है तथा जहाँ दो संज्ञा शब्द समान रूप मे आ जाते है वहाँ पर भी पूर्वनाम पद अव्ययीभाव होता है।

उदाहरण -
रातो रात - रात ही रात मे
हाथो हाथ - हाथ ही हाथ मे
बीचो बीच - बीच के भी बीच मे
घर घर - प्रतिघर / घर घर
दिन दिन - प्रतिदिन / हरदिन
वर्ष वर्ष - हरवर्ष प्रतिवर्ष
जीवन भर - पूरा जीवन

- <u>तत्पुरूष समास</u> - जिस समास मे उतरपद प्रधान होता है और प्रथम पद विशेषण जैसा होता है विशेषण नही होता तो उसे तत्पुरूष समास कहते है।

उदाहरण –

अहरह – अहन + अहन् व्यंजन संधि
दिन – दिन अव्ययीभाव समास
लुप्त कारक चिन्ह तत्पुरूष समास

जिस कारक चिन्ह का लोप हो जाता है उसी के आधार पर समास का नामकरण हो जाता है।

कारक विभक्ति चिन्ह –

कर्ता – ने
कर्म – को
करण – से सहायता से द्वारा , के द्वारा
सम्प्रदान – के लिए
अपादान – से अलग होना
सम्बन्ध – का , के की ,
अधिकरण – मे या पर
सम्बोधन – हे अरे ! ओ

कर्म तत्पुरूष समास (को)

उदाहरण –

गृहगत – घर को गया (आगत)
बाजार आपणगत – बाजार को गया
ग्राम गत – गाँव को गया
गगनचुम्बी – गगन को चुम्बने वाला
स्वर्गगल – स्वर्ग को गया
दिलतोड – दिल को तोडने वाला

करण तत्पुरूष समास – (से)

उदाहरण –

तृष्णापीडित – तृष्णा से पीडित
कामपीडित – काम से पीडित
ज्वरपीडित – ज्वर से पीडित
हस्तलिखित – हस्त से लिखित
वाग्युद्ध – वाक के द्वारा युद्ध

विशेष बात –

अंग विकार के योग मे करण तत्पुरूष समास होता है।

कर्णबधिर – कान से बहरा
पादपंगु – पैर से लगडा

धर्माध मदान्ध – मोहांर्ध प्रथम अधिकरण को माने
धर्म मे अन्धा मद मे अन्धा मोह

सम्प्रदान तत्पुरूष समास (के लिए)

उदाहरण –

विधानसभा – विधान के लिए सभा
विधानपरिषद् – विधान के लिए परिषद्
लोकसभा – लोक के लिए सभा
यज्ञशाला – यज्ञ के लिए शाला
रसोईघर – रसाई के लिए घर
गुरूदक्षिणा – गुरू के लिए दक्षिणा
कृषि भवन – कृषि के लिए भवन
उधोगभवन – उधोग के लिए भावन

कृषि सम्बन्धी कार्यो के लेखा – जोखा के लिए भवन
यज्ञ – लकडी दारू – सोमरस

- अपादान तत्पुरूष से अलग होना

उदाहरण :-

कर्जमुक्त – कर्ज से मुक्त
ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त
चिन्तामुक्त – चिंता से मुक्त
देशमुक्त – देश से निकाला
पथ भ्रष्ट – पथ से भ्रष्ट
विधालयगत – विधालय से आया
वनागत – राम वन से आया
ग्रामागत – (ग्राम गाँव) से आया।

से लेकर अर्थ में अपादान तत्पुरूष समान होता है।
जमांध – जन्म से अन्धा से लेकर अर्थ में होता है।
बालांध – बचपन से अन्धा
लज्जा रक्षा भय वियाग्रहण करना
इन शब्दों के योग में अपादान तत्पुरूष होता है।

उदाहरण :-

अश्वभीत – अश्व से भयभीत
अश्वरक्षित – अश्व से रक्षा करना
ओला – करकाभीत – ओले से डर
गुर्वधीत – गुरू से अधिन

- सम्बन्ध तत्पुरूष समास – का के की
- राष्ट्रपति – राष्ट्र का पति

राजकुमार – राजा का कुमार (पुत्र)
पशुबलि – पशु की बलि
मात्राज्ञा – माता की आज्ञा
मृगपालक – मृग का बच्चा होना

- अधिकरण तत्पुरूष समास – में पर

उदाहरण :-

वनवास – वन में वास
आपबीती – आप पर बीती
नगर प्रवेश – नगर में प्रवेश
रामाश्रित – राम से आश्रित
शरणागत – शरण में आगत (में आया)

- नण् तत्पुरूष समास :- यह समास में न के स्थान पर यदि बाद में व्यंजन होता है तो अ हो जाता है न के बाद कोई स्वर आता है तो न के स्थान पर अन् हो जाता है।

उदाहरण :-

न सत्य – असत्य
न उचित – अनुचित
न ऐतिहासिक – अनैतिहासिक
न आवश्यक – अनावश्यक
न ज्ञान – अज्ञान
न पर्णा – अपर्णा – पार्वती
न धर्म – अधर्म
न भय – अभय
पार्वती ने पत्ते खाना छोड दिया ।

- मध्यपद लोपी तत्पुरूष समास
  लुप्तपद तत्पुरूष समास

उदाहरण :-

दही बडा – दही में डूबा हुआ बडा
रेलगाडी – पटरी पर चलने वाली गाडी
बैलगाडी – बैलो द्वारा खींचकर चलाई जाने वाली गाडी
गुडधानी – गुड में मिली हुई धानी
रसगुल्ला – रस में डूबा हुआ गुल्ला
घृतान्त – घी में पका हुआ अन्न

- उपपद तत्पुरूष समासः-
  उत्तर पद में क्रिया रूप में प्रत्यय हो जिससे वाला अर्थ प्रकट होता है।

उदाहरणः-

जलद – जल को देने वाला
रचनाकार – रचना को करने वाला
मधूप – शहद – मधु को पीने वाला
नभचर – आकाश में चलने वाला
खग – (ख) आकाश में (ग)गमन करने वाला
स्वर्णकार – स्वर्ग का काम करने वाला
कुम्भकार – कुम्भ को आकार देने वाला
राजनीतिज्ञ – राजनीति को जानने वाला

- अलुक तत्पुरूष समासः- जिसमें हमें कोई विभक्ति दिखाई देती है वह अलुक तत्पुरूष समास है

उदाहरण :-

वनचर – वन में विचरण करने वाला
विश्वभर – विश्व को भ्रमण करने वाला
वसुन्धरा – वसुओं को धारण करने वाला
खचर – ख आकाश में विचरण करने वाला
वृहस्पति – वाणी का जो पति वृहत् वाणी
वाचस्पति – वाणी का जो पति

- कर्मधारय समास :- कर्मधारय समास में केवल और केवल विशेषता पाई जाती है। जहाँ विशेष्य की विशेषता बताई जाती है या उपमेय की उपमानता बताई जाती है वहाँ कर्मधारय समास होता है।

नीलकमल – नीला है जो कमल
महापुरूष – महान है जो पुरूष
चरणकमल – कमल रूपी चरण
संध्यासुन्दरी – संध्या रूपी सुन्दरी
विद्यारत्न – विद्या रूपी रत्न
लाल मिर्च – लाल है जो मिर्च
कमल मुख – कमल रूपी मुख
पीला वस्त्र – पीला है जो वस्त्र
अम्बरपनघट – अम्बर रूपी पनघट
नीलीगाय – नीली है जो गाय
सतपुरूष – सत्य है जो पुरूष

विशेष बातः – यदि दोनो पद पूर्व पद उत्तर पद विशेषता बताने वाले आ जाते है तो वहा कर्मधारय समास नही होता है। वहाँ द्वन्द्व समास माना जाता है।

हृष्ट – पुष्ट – हृष्ट और पुष्ट
मोटा – ताजा – मोटा और ताजा
नीला – पीला – नीला और पीला

5. द्वन्द्व समास :-
   जिस समास में दोनो पद समास होते है उसे द्वन्द्व समास कहते है । द्वन्द्व समास के तीन भेद माने जाते है ।

1. इतरेतर द्वन्द्व – और एवं तथा
2. समाहार द्वन्द्व – आदि इत्यादि
3. वैकल्पिक द्वन्द्व – या अथवा वा